P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking
Vol-II * Issue- XI* April- 2016

देश के आर्थिक विकास में शिक्षा की भूमिका

मुकेश कुमार गौतम
एसोसिएट प्रोफेसर,
शिक्षा विभाग,
दयालबाग एजुके"ानल इन्स्टीट्यूट,
(डीम्ड वि"ववि़द्यालय) दयालबाग,
आगरा

सारांश

आर्थिक विकास में f"ाक्षा बड़ा ही स"ाक्त साधन है। दे"ा के आर्थिक विकास के लिये दे"ा के सभी बालक एवं बालिकाओं को सार्वजनिक रुप से f"ाक्षा देना हम सभी की पहली जिम्मेदारी बनती है। कि दे"ा के सभी बालक एवं बालिकाओं को गुणवत्तायुक्त वैज्ञानिक एवं तकनीकि f"ाक्षा प्रदान की जाये। जिससे हमारे दे"ा का आर्थिक विकास सफलतापूर्वक हो सकें।

मुख्य शब्द : स्पष्टीकरण, औद्योगीकरण, यन्त्रीकरण, वि"ाष्टीकरण, गुणवत्ता, व्यावसायीकरण, उत्तरोत्तर वृद्धि, उल्लेखनीय प्रगति।

प्रस्तावना

द्वितीय वि"वयुद्ध के बाद सम्पूर्ण वि"व में f"ाक्षा के प्रसार का एक व्यापक दौर प्रारम्भ हो गया। विकास की इस तीव्र गति का कारण ज्ञान का विस्फोट तथा उद्योगों में नवीन तकनीकी क्रान्ति था। परिवर्तन की गति इतनी तीव्र हो गयी कि आज का सीखा हुआ ज्ञान दस वर्ष पुराना पड़ रहा है। आज के उद्योगों में अकु"ाल कार्यकर्ता सफलतापूर्वक कार्य नहीं कर पा रहे है। साथ ही पर्यावरण के परिवर्तित हो जाने के कारण उसे नियन्त्रण में लाने के लिये f"ाक्षा की माँग दिनों–दिन बढ़ने लगी है। इसके अतिरिक्त शैक्षिक अवसरों की समानता की माँग भी बढ़ती जा रही है। इस माँग ने f"ाक्षा पर होने वाले व्यय मे वृद्धि कर दी। इस बढ़ते हुये व्यय का क्या औचित्य है? यह उत्तर f"ाक्षा का अथ"ाास्त्र देने का प्रयास करता है।

आजादी के लिये लम्बे संघर्ष के बाद ही भारत स्वतन्त्र हुआ। स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान ही हमारे महान नेताओं ने हमारे राष्ट्रीय लक्ष्यों की रुपरेखा तैयार कर ली थी। जिसको साकार रुप भारतीय संविधान के रुप में दे"ा के आजाद होने के प"चात ही मिला। भारतीय संविधान में हमारे राष्ट्रीय विकास को स्पष्ट रुप में प्रस्तुत किया गया है। जिसमें दे"ा का आर्थिक विकास प्रमुख था।

उद्देश्य

1. दे"ा की अर्थव्यवस्था के विषय में समझदारी विकसित करना।
2. दे"ा के लोगों में आर्थिक कु"ालता का विकास करना।
3. दे"ा के लोगों को आर्थिक रुप से सजग बनाना।
4. दे"ा के लोगों को प्रतिव्यक्ति वास्तविक राष्ट्रीय आय के सन्दर्भ में ज्ञान देना।
5. दे"ा में होने वाले आर्थिक परिवर्तनों के विषय में लोगों को जानकारी देना।
6. दे"ा के लोगों को आर्थिक विकास में f"ाक्षा की भूमिका के विषय में जानकारी उपलब्ध कराना।

आर्थिक विकास से आशय

बेल्डविन ने लिखा है कि ''आर्थिक विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें किसी भी राष्ट्र की आर्थिक आय लम्बे समय तक बढ़ती है।'' सी0सी0 आनन्द ने लिखा है कि ''आर्थिक विकास से हमारा अभिप्राय है कि राष्ट्रीय आय का वह अनुपात जिसे भौतिक निवे"ा में लगाया जाता है आर्थिक विकास है।''

मायर एवं बेल्डविन के अनुसार ''आर्थिक विकास एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक आर्थिक व्यवस्था की वास्तविक राष्ट्रीय आय दीर्घकाल में बढ़ती है।'' इस परिभाषाओं में तीन शब्द प्रक्रिया, वास्तविक राष्ट्रीय आय और दीर्घकाल महत्वपूर्ण है जिसका स्पष्टीकरण इस प्रकार है–

प्रक्रिया (Process)

यहाँ प्रक्रिया से अभिप्राय अर्थव्यवस्था के विभिन्न अवयवों (organs) में होने वाले परिवर्तनां से है। ये परिवर्तन विभिन्न तत्वों से प्रभावित होते है। इन परिवर्तनों का सम्बन्ध साधनों की पूर्ति तथा उनकी माँग में होने वाले परिवर्तनों से है। माँग के स्वरुप में आय के स्तर तथा उसके वितरण के स्वरुप में परिवर्तन, उपभोक्ताओं की वरीयता में परिवर्तन आदि परिवर्तन होते रहते है। इस प्रकार आर्थिक विकास के फलस्वरुप माँग एक पूर्ति के स्वरुप में भी परिवर्तन

P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking
Vol-II * Issue- XI* April- 2016

होते रहते है। इन परिवर्तनों एवं इसकी सीमा आर्थिक विकास की गति तथा समय पर निर्भर करती है।

वास्तविक राष्ट्रीय आय (Real National Income)

वास्तविक राष्ट्रीय आय से तात्पर्य दे"ा में

दीर्घकाल (Long Term)

आर्थिक विकिास के लिय यह आव"यक है कि शुद्ध राष्ट्रीय आय में उत्तरोत्तर वृद्धि हो। किसी एक वर्ष में अनुकूल परिस्थितियों के कारण हुई वृद्धि को आर्थिक विकास का सूचक नहीं माना जा सकता है। बल्कि दस या बीस वर्ष की अवधि में हुये परिवर्तनों पर विचार किया जाता है। इस प्रकार आर्थिक विकास का सम्बन्ध अल्पकालीन परिवर्तनों से न होकर दीर्घकालीन परिवर्तनों से होता है।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने आर्थिक विकास को परिभाषित करते हुये लिखा है कि –''विकास केवल मनुष्य की भौतिक आव"यकताओं से ही नही बल्कि उसके जीवन की सामाजिक द"ाओं की समुन्नति से भो सम्बन्धित होता है। विकास केवल आर्थिक प्रगति ही नहीं है वरन् उसमें मानव के सामाजिक, सांस्कृतिक, संस्थागत एवं आर्थिक परिवर्तन भी शामिल है।

आर्थिक विकास के निर्धारक तत्व (Determinant elements of Economic Development)

मानव आर्थिक क्रियाओं का साधन एवं साध्य दोनों है। जनसंख्या की वृद्धि ने वि"व के आर्थिक विकास को प्रभावित किया है। जनसंख्या की बृद्धि के फलस्वरुप उत्पादन के एक साधन (श्रम) की पूर्ति में वृद्धि होती है। मानव श्रम को जाति की श्रेष्ठ उत्पादक सम्पत्ति मानी जाती है। अधिक जनसंख्या होने पर दे"ा की साभित पूँजी, उपकरण आदि बँट जाते है। अतः उनका अनुकूलतम प्रयोग नहीं हो पाता। दे"ा के आर्थिक विकास को चार प्रमुख तत्व प्रभावित करते है।

प्राकृतिक साधन (National Recourses)

आर्थिक विकास के लिये श्रम की भाँति प्राकृतिक साधनों का भी अत्यधिक महत्व है। किसी भी अर्थव्यवस्था का उत्पादन उसकी मिट्टी, जंगल, खनिज पदार्थ, पानी आदि की स्थिति गुण एवं मात्रा पर आधारित है। नवीनतम प्राकृतिक संसाधनों की खोज द्वारा उत्पादन में वृद्धि की जा सकती है। अतः प्राकृतिक संसाधनों से सम्पन्न राष्ट्र के आर्थिक विकास की सम्भावनायें अधिक होती है।

पूँजी (Capital)

पूँजी किसी भी दे"ा के आर्थिक विकास का आधार है। औद्योगिकीकरण, कृषि के यन्त्रीकरण एवं परिवहन के साधन आदि के विकास के लिये अधिक पूँजी की आव"यकता होती है। पूँजी के अधिकाधिक प्रयोग से उत्पादन की नवीनतम विधियों का प्रयोग सम्भव है। और नये उपकरण प्राप्त किये जा सकते है। साथ ही अधिक से अधिक जनसंख्सा को अधिक उत्पादन में लगाना सम्भव हो जाता है। पूँजी निर्माण के लिये धन और पूँजीगत उत्पादनों के साधनों की अधिक आव"यकता है।

वैज्ञानिक एवं प्राविधिक प्रगति (Scientific and Technical Progress)

वैज्ञानिक एवं प्राविधिक प्रगति से उत्पादन की नयी विधियों का ज्ञान होता है। साथ ही पूँजी प्रधान उत्पादन की विधियों का प्रयोग बढ़ जाता है। वस्तुतः पूँजी उत्पादित अन्तिम वस्तुओं एवं सेवाओं के कुल योग के समायोजित मूल्य से है। किसी भी दे"ा का आर्थिक विकास उस समय पर होता है जब उस दे"ा की वास्तविक राष्ट्रीय आय में बृद्धि होने से है।

निर्माण एवं प्राविधिक प्रगति साथ–साथ चलते है। अतः वैज्ञानिक एवं प्राविधिक प्रगति ने मानव समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

संगठन एवं विशिष्टीकरण (Organization and Specialization)

किसी भी राष्ट्र के आर्थिक विकास में उत्पादन के साधनों की प्रयोग विधि का महत्वपूर्ण स्थान होता है। श्रम–विभाजन तथा वि"ोष्टीकरण द्वारा उत्पादन में वृद्धि होती है। साथ ही उत्पादन के साधनों का उपयोग होता है और आर्थिक विकास को गति प्राप्त होती है।

आर्थिक विकास के आयाम (Dimension of Economic Development)

किसी भी राष्ट्र के आर्थिक विकास के चार प्रमुख आयाम दिखायी देते है। ये आयाम है–

राष्ट्रीय आय (National Income)

किसी दे"ा के विकास में दीर्घकाल में हुई वास्तविक राष्ट्रीय आय में वृद्धि ''आर्थिक विकास'' कहलाती है।

प्रति व्यक्ति आय (Per Capita Income)

आर्थिक विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें दे"ा की वास्तविक प्रति व्यक्ति आय लम्बी अवधि में बढ़ती जाती है।

भौतिक हित (Physical Well being)

आर्थिक विकास से तात्पर्य है–''भौतिक हित का स्थायी एवं धर्म–निरपेक्ष सुधार। जो वस्तुओं एवं सेवाओं के बढ़ते हुये प्रवाह में प्रतिविम्बित होता है।'' दूसरे शब्दों में इसका आ"ाय है–**''लोगों की आर्थिक वृद्धि''।**

मानवीय संसाधनों का विकास (Development of Human Resources)

आर्थिक विकास से तात्पर्य है प्रत्येक व्यक्ति के लिये पूर्व एवं उचित रोजगार की सुनि"चित व्यवस्था, सभी की वेतन वृद्धि को सुनि"चित करना, कृषि का पर्याप्त विकास अर्थात लोगों के लिये पर्याप्त भोजन की व्यवस्था करना गरीब और अमीर के मध्य खाई को कम करना एवं समाज में समाजवादी ढ़ाँचे का निर्माण करना आदि।

आर्थिक विकास में शिक्षा की भूमिका (Role of Education in Economic Development)

किसी भी राष्ट्र के आर्थिक विकास में ि"ाक्षा महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। हमारे दे"ा की अर्थव्यवस्था मिश्रित अर्थव्यवस्था है। इसमें सरकारी और गैर सरकारी (निजी) दोनों प्रकार के उपक्रमों को महत्व दिया जाता है। साथ ही हमारी अर्थव्यवस्था कृषि एवं उद्योग दोनों पर आधारित है। अतः ि"ाक्षा को इस प्रकार नियोजित करने की आव"यकता है कि यहाँ के सरकारी एवं गैर सरकारी दोनों प्रकार के उद्योगों के लिये तकनीकी वि"ोषज्ञ तैयार किये जायें। साथ ही भारत को विकसित दे"ा की श्रेणी में पहुँचाने के लिये ि"ाक्षा का व्यावसायीकरण करना भी आव"यक है। इसके अतिरिक्त वैज्ञानिक शोधकार्य पर बल देना भी आव"यक है जिससे प्रोद्यौगिकी विकसित हो सके, साथ ही साथ ही औद्योगिक विकास को तैयार करन के लिये कदम उठाये जाने

P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking
Vol-II * Issue- XI* April- 2016

चाहिये। इन मानवीय संसाधनों के विकास में ि"ाक्षा महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

1. ि"ाक्षा के द्वारा तकनीकी क्षेत्र में क्रान्ति लायी जाती है और तकनीकी क्रान्ति का प्रभाव दे"ा की उत्पादन क्षमता पर पडता है। तकनीकी एवं वैज्ञानिक ज्ञान से सकल राष्ट्रीय उत्पादन बढ़ता है।
2. ि"ाक्षा के द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में समृद्धि के नये–नये मार्ग सुलभ होते है। ग्रामीण कृषि ज्ञान का उपयोग कर अपने दे"ा के उत्पादन को बढ़ा सकते है।
3. ि"ाक्षा श्रमिकों की कार्य कु"ालता में वृद्धि कर मानवीय संसाधनों को बढ़ाती है।
4. ि"ाक्षा व्यक्ति को सोचने–समझने, तर्क करने, तुलना करने, विभेद करने तथा वि"लेषण करने की क्षमता का विकास करती है। इसके अतिरिक्त ि"ाक्षा व्यक्ति के रहन–सहन कार्य करने के ढ़ंग तथा उत्पादन की क्षमता पर प्रभाव डालती है।
5. ि"ाक्षा प्राकृतिक संसाधना का सदप्रयोग कर आर्थिक प्रगति का मार्ग प्र"ास्त करती है। वि"व के कुछ राष्ट जैसे–अरब, मैक्सिको, ब्राजील आदि में प्राकृतिक सम्पदाओं के प्रचर भण्डार है लेकिन शैक्षिक सुविधाओं के अभाव में ये राष्ट्र अपने प्राकृतिक संसाधनों का पूर्ण सद्पयोग नहीं कर पाते है। फलतः पर्याप्त राष्ट्रीय विकास नहीं कर पाये है। इसके विपरीत स्विटजरलैण्ड, जर्मनी तथा डेनमार्क में सीमित प्राकृतिक संसाधन है लेकिन सुन्दर ि"ाक्षा व्यवस्था के कारण इन राष्ट्रो ने अपने सीमित साधनों का भरपूर सद्पयोग किया है और उल्लेखनीय आर्थिक विकास भी किया।
6. ि"ाक्षा के द्वारा राष्ट्र की आर्थिक व्यवस्था के दोषों को दूर करके उसे और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।
7. ि"ाक्षा हमारे दृष्टिकोण एवं चिन्ता को नई दि"ाा प्रदान करती है। इससे पूँजी–निर्माण के सम्बन्ध में हमारी धारणायें परिवर्तित होते है।
8. ि"ाक्षा के द्वारा व्यक्ति आर्थिक विकास के सन्दर्भ नीतियाँ बना सकता है। उन नीतियों को क्रियान्वित करने के लिये दबाव बना सकता है जिससे आर्थिक विकास सम्भव हो सकता है।

निष्कर्ष

सच कहा जाये तो आधुनिक समय में किसी भी दे"ा के आर्थिक विकास में ि"ाक्षा बड़ा ही स"ाक्त साधन है। अमेरिका के प्रसिद्ध अर्थ"ाास्त्री शुल्ज ने इस सन्दर्भ में ठीक ही लिखा है। कल्पना कीजिये कि एक अर्थव्यवस्था में पर्याप्त भूमि है, अच्छी भौतिक परिस्थिति भी है, पर्याप्त पूँजी है, उत्पादन की तकनीकी भी है। लेकिन प्र"िाक्षित श्रमिक नहीं है जिन्होंने किसी विद्यालय अथवा वि"वविद्यालय में ि"ाक्षा प्राप्त की हो जो स्थानीय व्यवस्था के अतिरिक्त अन्य अर्थव्यवस्था का ज्ञान रखता हो। दे"ा के आर्थिक विकास के लिये दे"ा के सभी बालक एवं बालिकाओं को सार्वजनिक रुप से ि"ाक्षा देना हमारी पहली जिम्मेदारी बनती है। कि सभी बालक एवं बालिकाओं को गुणवत्तायुक्त वैज्ञानिक एवं तकनीको ि"ाक्षा दी जाये जिससे हमारे दे"ा का आर्थिक विकास सफलतापूर्वक हो सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्निहोत्री रवीन्द (2006):– भारतीय ि"ाक्षा की वर्तमान समस्याये, रिसर्च पब्लिके"ान, दिल्ली।
2. बालिया जे. एस. (2013) :– आधुनिक भारतीय ि"ाक्षा, पाल पब्लिके"ान, जालन्धर, पंजाब, चतर्थ संस्करण
3. भारत (2016) :– सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली।
4. भटनागर एस. सी. एवं सक्सेना अनामिका (2010) – आधुनिक भारतीय ि"ाक्षा और उसकी समस्यायें, आर. लाल बुक डिपो मेरठ
5. ि"ाक्षा की चुनौती (1985) :– नीति सम्बन्धी परिप्रेक्ष्य, भारत सरकार, नई दिल्ली।
6. परिप्रेक्ष्य (2003):– शैक्षिक योजना और प्र"ाासन का सामाजिक, आर्थिक सन्दर्भ, नीपा, नई दिल्ली।
7- Report of the Educational Commission 1964-66, information and communication ministry government of India New Delhi
8- Sachdeva D.D. (2001):- Social welfare administration in India, Allahabad, Kitab Mahal.
9- Singhal S.C. (2001):- India's foreign Policy, Laxmi Narayan Publication, Sanjay Place, Agra.
10. शर्मा वी. डी. (2011) :– भारतीय अर्थव्यवस्था, ओमेगा पब्लिके"ान, नई दिल्ली।
11. तिवारी, वि"वनाथ (2010) :– आर्थिक एवं मानव भूगोल का स्वरुप, ि"ावचरन लाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा।